



सत्यमेव जयते

7

गणतंत्र दिवस परेड – 2005

Republic Day Parade - 2005

26 जनवरी 2005 (6 माघ, शक संवत् 1926)

26 January 2005 (6 Magha, Saka Samvat 1926)

कार्यक्रम

PROGRAMME

0957 बजे भारत के राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि भूटान नरेश के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन।

0957 hours The President, accompanied by the Chief Guest, The King of Bhutan, arrives in State.

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि का स्वागत।

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेना प्रमुखों और रक्षा सचिव का परिचय।

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three service Chiefs and Defence Secretary.

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान। प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की, उनके आसनों की ओर अगवानी।

The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the Rostrum. The Prime Minister escorts the President and the Chief Guest to their seats.

ध्वजारोहण तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षकों द्वारा राष्ट्रीय सलामी। बैंड द्वारा राष्ट्रीय गान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

The National Flag is unfurled. The President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun salute is fired.

गणतंत्र दिवस परेड का शुभारंभ।

The Republic Day Parade commences.

सांस्कृतिक प्रस्तुति।

The Cultural Pageant.

मोटर साइकिल करतब।

Motor cycle display.

वायुयानों द्वारा सलामी।

Fly-past.

राष्ट्रीय सलामी।

National Salute.

राष्ट्रपति द्वारा मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

परेड-क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप-कमांडर

परमवीर चक्र व अशोक चक्र विजेता

सेना

सवार जत्था

61 रिसाला

यांत्रिक दस्ते

टी-90 टैंक – एस/एस के

एअरबोर्न गनर्स

105 एम एम लाइट फील्ड गन

पृथ्वी मिसाइल

अग्नि-I मिसाइल

अग्नि-II मिसाइल

तुंगुस्का वैपन सिस्टम

मैट ग्राउंड सर्फेसिंग

क्लास 70

हाइड्रेमा डिमाइनिंग वहीकल

मोबाइल सैटेलाइट टर्मिनल

माउंटेड जेड यू 23 एम एम ट्विन गन

आई सी वी बी एम पी-II

उन्नत हल्का हेलिकॉप्टर (उड़ते हुए)

ORDER OF MARCH

Showering of flower petals by IAF helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashoka Chakra Awardees

ARMY

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

Tank T-90 - S/SK

Airborne Gunners

105 mm Light Field Gun

Prithvi Missile

Agni-I Missile

Agni-II Missile

Tunguska Weapon System

Mat Ground Surfacing

Class 70

Hydrema Demining Vehicle

Mobile Satellite Terminal

Mounted ZU 23 mm Twin Gun

ICV BMP-II

Advance Light Helicopter (ALH) (Flying)

मार्च करते हुए जत्थे

गार्ड ब्रिगेड रेजीमेंट
मद्रास इंजीनियर ग्रुप एवं केन्द्र
एक सिग्नल प्रशिक्षण केन्द्र
पंजाब रेजीमेंट

} बैंड धुन :
'वीर सियाचिन'

ग्रेनेडियर रेजिमेंट
पैरा प्रशिक्षण केन्द्र
जाट रेजीमेंटल केन्द्र
जाट रेजीमेंट

} बैंड धुन :
'सिंगढ़'

सिख रेजीमेंट
वायु रक्षा तोपखाना केन्द्र
डोगरा रेजीमेंटल केन्द्र
डोगरा रेजीमेंट

} बैंड धुन :
'वीर भारत'

बिहार रेजीमेंट
मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री रेजीमेंटल केन्द्र
महार रेजीमेंटल केन्द्र
महार रेजीमेंट

} बैंड धुन :
'गंगोत्री'

जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री रेजीमेंट
जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री रेजीमेंटल केन्द्र
पायनियर कोर प्रशिक्षण केन्द्र
9 गोरखा राइफल

} बैंड धुन :
'वीर गोरखा'

8 गोरखा राइफल
58 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र
ए एस सी नॉर्थ
प्रादेशिक सेना
(119 इन्फैंट्री बटालियन असम)

} बैंड धुन :
'वीर कारगिल'

नौसेना

नौसेना का ब्रास बैंड
नौसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी

झांकियां :

- माउंट एवरेस्ट अभियान
- आइ एन एस तरंगिनी का परिनौसंचालन

Marching Contingents

The Brigade of Guards Regt.
The Madras Engineers Group & Centre
One Signal Training Centre
The Punjab Regt.

} Band playing
'Veer Siachin'

The Grenadiers Regt.
The Para Training Centre
The Jat Regimental Centre
The Jat Regiment

} Band playing
'Singarh'

Sikh Regt.
The AD Arty. Centre
The Dogra Regtl. Centre
The Dogra Regt.

} Band playing
'Veer Bharat'

The Bihar Regt.
The Mech. Infantry Regtl. Centre
The Mahar Regtl. Centre
The Mahar Regt.

} Band playing
'Gangotri'

JAK LI Regt.
JAK LI Regtl. Centre
The Pioneer Corps Training Centre
The 9 Gorkha Rifles

} Band playing
'Veer Gorkha'

The 8 Gorkha Rifles
The 58 Gorkha Training Centre
ASC North
The Territorial Army
(119 Infantry Bn. Assam)

} Band playing
'Veer Kargil'

NAVY

Naval Brass Band
Marching Contingent

} Band playing 'Jai Bharti'

Tableaux :

- Mount Everest Expedition
- Circumnavigation voyage of INS Tarangini

वायुसेना

वायुसेना का बैंड } बैंड धुन : 'टाइगर हिल'
वायुसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी

वाहन दस्ते

ट्रेलर पर एम आई-25 आक्रमण हेलिकॉप्टर
ट्रेलर पर यू ए वी सर्चर एम के-II

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन का उपस्कर जत्था

ब्रह्मोस - स्वचालित प्रक्षेपक कमांड पोस्ट के साथ
समयुक्ता - जामर
कवचित इंजीनियरिंग टोही वाहन
पिनाका - प्रक्षेपक

भूतपूर्व सैनिक

सामूहिक पाइप और ड्रम } बैंड धुन : 'देशों का सरताज'
भूतपूर्व सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

अर्द्ध-सैन्य तथा अन्य सहायक असैनिक बल

सीमा सुरक्षा बल का बैंड } बैंड धुन : 'विजय भारत'
सीमा सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल की ऊंटों की टुकड़ी
सीमा सुरक्षा बल के ऊंटों पर बैंड } धुन : 'हम हैं सीमा
सुरक्षा बल'

असम राइफल बल की मार्च करती हुई टुकड़ी
असम राइफल का बैंड } बैंड धुन : 'असम राइफल'

तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

केंद्रीय आरक्षी पुलिस बल का बैंड } बैंड धुन : 'सेवा भक्ति
का यह प्रतीक'
केंद्रीय आरक्षी पुलिस बल की मार्च करती हुई महिला टुकड़ी

AIR FORCE

Air Force Band } Band playing 'Tiger Hill'
Air Force Marching Contingent

Vehicular Columns

Mi-25 attack helicopter on trailer
UAV Searcher MK-II on trailer

DRDO EQUIPMENT COLUMNS

Brahmos - Autonomous Launcher with Command Post
Samyukta - Jammer
Armoured Engineering Reconnaissance Vehicle (AERV)
Pinaka - Launcher

EX-SERVICEMEN

Mass Pipes and Drums } Band playing 'Deshon Ka
Sartaj'
Ex-Servicemen Marching Contingent

PARA-MILITARY AND OTHER AUXILIARY CIVIL FORCES

BSF Band } Band playing 'Vijay Bharat'
BSF Marching Contingent

BSF Camel Contingent

BSF Camel Band } Band playing 'Hum Hain
Seema Suraksha Bal'

Assam Rifles Marching Contingent
Assam Rifles Band } Band playing 'Assam Rifles'

Coast Guard Marching Contingent

CRPF Band } Band playing 'Seva Bhakti ka
Yeh Prateek'
CRPF Mahila Marching Contingent

भारत-तिब्बत सीमा पुलिस का बैंड } बैंड धुन : 'हम
भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी } सरहद के सेनानी'

ITBP Band } Band playing 'Hum
ITBP Marching Contingent } Sarhad ke Senani'

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल का बैंड } बैंड धुन :
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी } 'हिन्दुस्तान
हिन्दुस्तान'

CISF Band } Band playing 'Hindustan Hindustan'
CISF Marching Contingent

एस एस बी का बैंड } बैंड धुन : 'यही संदेश लाए हैं'
एस एस बी की मार्च करती हुई टुकड़ी

SSB Band } Band playing 'Yahi Sandesha Laye Hain'
SSB Marching Contingent

रेलवे सुरक्षा बल का बैंड } बैंड धुन : 'सारे जहां से अच्छा'
रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

RPF Band } Band playing 'Sare Jahan Se Achcha'
RPF Marching Contingent

दिल्ली पुलिस का बैंड } बैंड धुन : 'दिल्ली पुलिस'
दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

Delhi Police Band } Band playing 'Delhi Police'
Delhi Police Marching Contingent

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)

बालक (एनसीसी)-सैनिक स्कूल का बैंड } बैंड धुन :
सीनियर डिवीजन के बालकों की मार्च करती हुई टुकड़ी } 'विजय भारत'

NATIONAL CADET CORPS (NCC)
Boys (NCC) - Sainik School Band } Band playing
Senior Division Boys Marching Contingent } 'Vijay Bharat'

बालिकाएं (एनसीसी) पिलानी का बैंड } बैंड धुन : 'सारे
सीनियर डिवीजन की बालिकाओं की मार्च करती हुई टुकड़ी } जहां से अच्छा'

Girls (NCC) Band - Pilani } Band playing 'Sare
Senior Division Girls Marching Contingent } Jahan Se Achcha'

सामूहिक पाइप और ड्रम } बैंड धुन : 'सेनानी'
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी

Mass Pipes and Drums } Band playing 'Senani'
National Service Scheme Marching Contingent

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झांकियां : बाईस

हाथियों पर सवार राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

THE CULTURAL PAGEANT

TABLEAUX : Twenty Two

National Bravery Award winning children riding on elephants

बच्चों की प्रस्तुति

दिल्ली स्कूल का बैंड
(बालक और बालिकाएं) } बैंड धुन : 'एक
तारा तुन सितान'

ध्वज वाहक : बालक और बालिकाएं

स्कूली बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम:

उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य
देवरत्नम
विरासत
डोला
छत्तीसगढ़ी कर्मा
बरसाने की होली
तलवार नृत्य
सम्मी नृत्य

मोटर साइकल पर करतब : ए एस सी 'टॉरनेडोज'

वायुयानों द्वारा सलामी*

गुब्बारे उड़ाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

*मौसम अनुकूल होने पर।

CHILDREN'S PAGEANT

Delhi School Band
(Boys and Girls) } Band playing 'Ek
Tara Tun Sitan'

Flag Bearers – Boys and Girls

Items by School Children:

Folk Dance of Uttar Pradesh
Devarattam
Virasat
Dola
Chhattisgari Karma
Barsane Ki Holi
The Sword Dance
Sammi Dance

Motor cycle display : ASC 'TORNADOES'

FLY-PAST*

Release of balloons : Indian Meteorological
Department.

*If weather conditions permit.

8

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 56वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। इस सांस्कृतिक प्रस्तुति में हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विभिन्नता और प्रगति की एक झलक दिखाई देती है जो हमारे गौरवपूर्ण अतीत और सुखी तथा समृद्ध भविष्य के प्रति भारतवासियों की अभिलाषाओं की अभिव्यक्ति है।

इन रंगारंग झांकियों में भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय प्रगति का चित्रण किया गया है। इन झांकियों में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य और वास्तुशिल्पीय धरोहर को दर्शाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating the 56th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilization, cultural diversity and progress symbolizing India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

An array of colourful tableaux depict the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.



चित्तौड़गढ़ किला

राजस्थान की इस झांकी में गौरवमय अतीत के लिए प्रसिद्ध चित्तौड़गढ़ किले की भव्यता का चित्रण करने का प्रयास किया गया है। तत्कालीन मेवाड़ राज्य तथा इसकी राजधानी, चित्तौड़गढ़ अपने प्रचुर वास्तुशिल्प तथा सांस्कृतिक मूल्यों के लिए प्रसिद्ध है।

झांकी में 'विजय स्तम्भ' को दिखाया गया है। 47 फुट चौड़े तथा 10 फुट ऊंचे प्लेटफार्म पर बना यह 122 फुट ऊंचा 9 मंजिला स्मारक प्राचीन भारत की वास्तुशिल्प शैली तथा कारीगरी का नमूना है। इस स्मारक के भीतरी तथा बाहरी दीवारों पर पौराणिक देवी-देवताओं तथा रामायण एवं महाभारत के दृश्यों और पात्रों का ऐसा विस्तृत चित्रण किया गया है जिसको देखकर दर्शक मंत्र-मुग्ध हो जाता है। पिछले भाग में चित्तौड़ किले की विशाल प्रतिकृति दर्शाई गई है। किले की दीवार के साथ चित्तौड़गढ़ में स्थित मीरा का मंदिर भी प्रदर्शित किया गया है। झांकी के पार्श्व भाग में गड़िया लुहार की जीवन-शैली तथा मरुस्थल के जहाज ऊंट का चित्रण किया गया है।

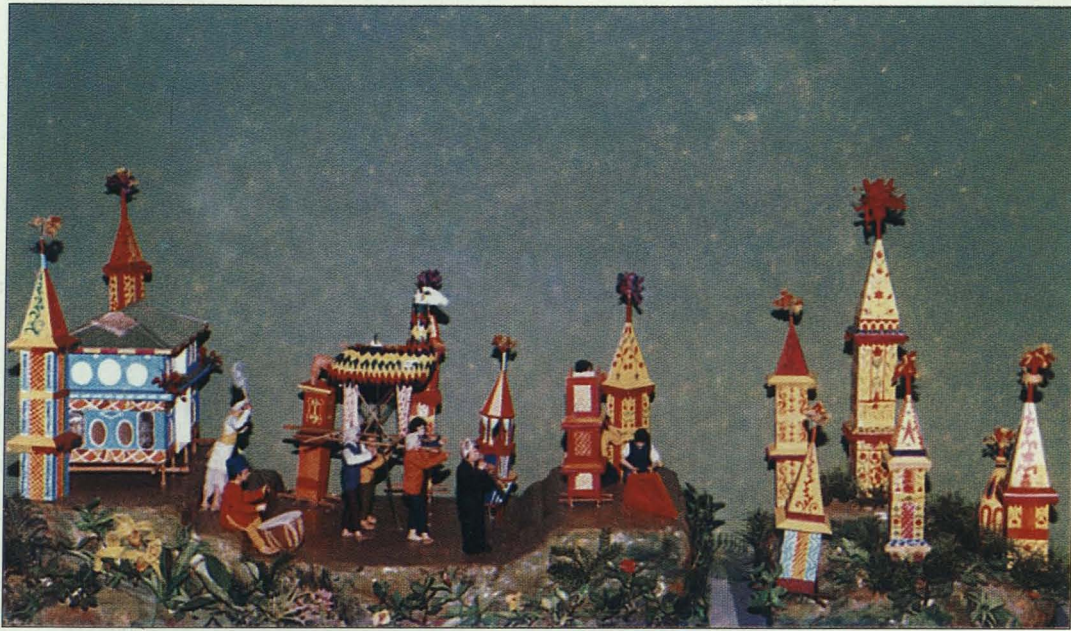
Chittorgarh Fort

The tableau of Rajasthan attempts to depict the grandeur of Chittorgarh Fort known for its glorious past. The region of erstwhile Mewad State and its capital, Chittorgarh is famous for its rich architectural and cultural values.

The tableau showcases 'Vijay Stambha' (Victory Tower). Built on a 47 feet square and 10 feet high platform base, this 122 feet high, 9 storeyed monument is symbolic of ancient Indian architectural style and artistry. In the interior and on the exterior of this monument, inscriptions depicting gods and goddesses and scenes and characters from Ramayana and Mahabharata are engraved in great detail and leave the visitor spell bound. A replica of the Fort of Chittor has been displayed on the trailer along with Meera's Temple situated in Chittorgarh. The side panels of the tableau depict the life style of Gadia Lohar (Black Smith) and the camel, the ship of the desert.

राजस्थान

Rajasthan



बेहदियेखलाम – जयंतियों का त्यौहार

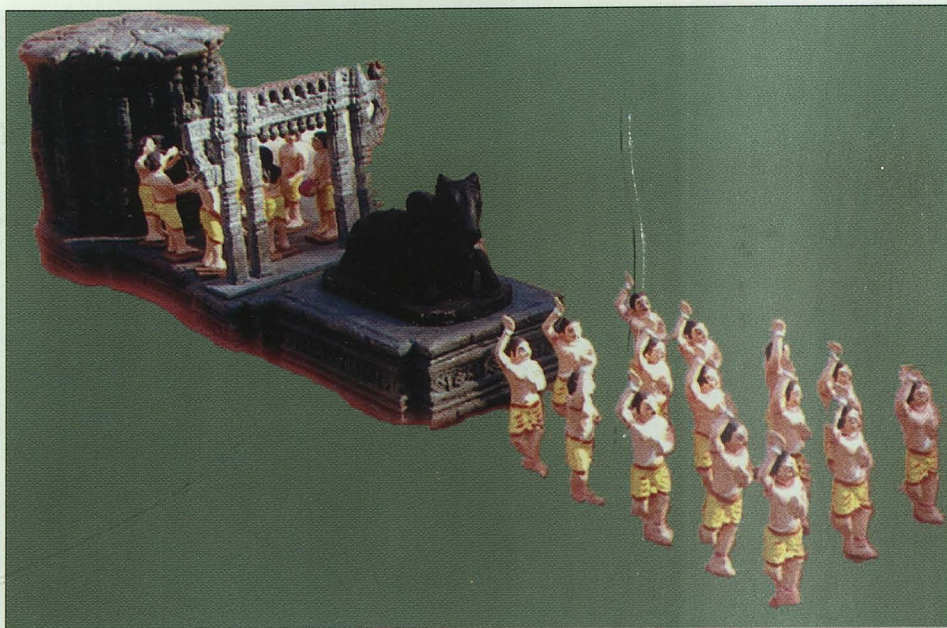
“मेघों की भूमि” – मेघालय जन-जातियों तथा लोक परम्पराओं का धनी है। मेघालय की जयंतिया जन-जाति का अत्यधिक लोकप्रिय, रंगारंग तथा राजसी त्यौहार ‘बेहदियेखलाम’ जुलाई माह में मनाया जाता है ताकि हाल ही में बोई गई फसल की उपज प्रचुर मात्रा में हो। बेहदियेखलाम का शब्दार्थ – ‘बेहदिये’ अर्थात् लाठियों तथा ‘खलाम’ का अर्थ है प्लेग अथवा महामारी को दूर करना। आमतौर पर बरसात में मनाया जाने वाला त्यौहार चार दिन तक चलता है जिसमें धार्मिक समारोह, जलसे, नृत्य और ‘दतलावाकर’ नामक लकड़ी के गेंद से खेला जाने वाला सोंकर (फुटबाल) से मिलता-जुलता एक प्राचीन खेल खेलना इत्यादि कार्यक्रम होते हैं। यह एक बहुत ही रंगारंग तथा लोकप्रिय त्यौहार है जिसमें केवल युवा अथवा बूढ़े पुरुष ढोलक तथा बांसुरी की तान पर नृत्य में भाग लेते हैं। महिलाएं नृत्य में भाग नहीं लेती परंतु घर में कुशलता तथा समृद्धि के लिए अपने पूर्वजों को पवित्र भोजन अर्पित करने में उनकी अहम भूमिका होती है।

मेघालय

Behdeinkhlam – Festival of Jaintias

Meghalaya, “the land of clouds” abounds in tribes and folk traditions. The most popular, colourful and majestic event of the Jaintia tribe of Meghalaya, the ‘Behdeinkhlam’ festival is celebrated in the month of July to ensure a bountiful harvest from the crop recently sown. Behdeinkhlam literally means ‘Behdein’ – to drive away with sticks and ‘Khlam’ – plague or pestilence. The actual festival, running for four days, featuring religious ceremonies, processions, dancing, usually in the rain, and playing of an ancient game akin to Soccer (Football) but played with a wooden ball, is known as ‘Datlawakor’. It is a very colourful and popular festival where only men, young or old take part in dancing to the tune of drums and flute. Women do not take part in the dancing but have an important role to play at home in offering sacrificial food to the spirits of the ancestors for their well-being and prosperity.

Meghalaya



काकतिय - पर्यटन का सिंह द्वार

आन्ध्र प्रदेश की झांकी में इसके वैभवपूर्ण वास्तुशिल्पीय धरोहर का चित्रण किया गया है। 12वीं से 14वीं सदी ई. पू. में अपने शासनकाल के दौरान काकतिय वंश का विशिष्ट शिल्पकला, मूर्तिकला तथा तेलगू संस्कृति की पहचान तथा लिपि के विकास में योगदान रहा है। काकतिय काल की शिल्पकला इतनी समृद्ध तथा आकर्षक है कि दर्शक इसको देखकर विनम्र हो जाते हैं।

उत्कृष्टता से तराशे गए स्तम्भों के लिए प्रसिद्ध-हजार स्तम्भ वाले मंदिर-चिलमन, गहन मूर्तिकला तथा काला बेसाल्ट नंदी-बारहवीं सदी के इस वास्तुशिल्प की अद्भुत भव्यता झांकी के अग्रभाग में दर्शाई गई है। 13वीं सदी में बने पाषाण के चार विशाल सिंह द्वार जो कि वारंगल किले के प्रतीक हैं, भी झांकी में दिखाए गए हैं। समकालीन पेरिनी शिव तांडवम्, भगवान शिव की स्तुति के रूप में योद्धा वंश के परम्परागत पुरुष नृत्य को भी आकर्षक पृष्ठभूमि में दिखाया गया है।

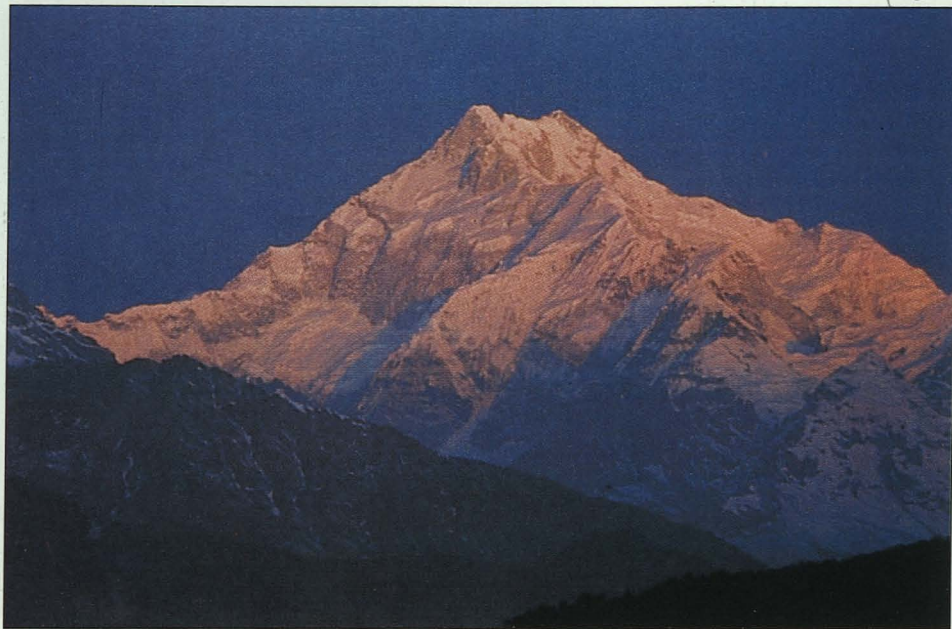
Kakatiya – Gateway to Tourism

The tableau of Andhra Pradesh depicts its glorious architectural heritage. The Kakatiya dynasty during its rule from 12th to 14th century A.D., had played a pivotal role in the development of a distinctive architecture, sculpture, script and identity for Telugu culture. The architecture of the Kakatiya period is so majestic and imposing that it leaves the visitors humbled.

A twelfth century A.D. architectural wonder, Temple of Thousand Pillars - famous for its exquisitely carved pillars, screens, detailed sculptures is depicted on the trailer. On the tractor is shown, a black basalt Nandi with polished finish. Four huge stone gateways, symbolic of Warrangal Fort, which was built in the 13th century, are also shown in the tableau. It also provides a back-drop to the contemporary Perini Siva Tandavam, the traditional male dance of the warrior clans as an invocation to Lord Siva.

आंध्र प्रदेश

Andhra Pradesh



शांति और सद्भावना की भूमि - पर्वत देवता को प्रणाम

हिमालय में बसा एक छोटा-सा राज्य सिक्किम एक परी कथा भूमि की जादुई अनुभूति प्रदान करता है। छिपी हुई पहाड़ियों, रहस्यमय मठों, बर्फ से आच्छादित झीलों तथा फूलों से ढके पर्वतों तथा वनों से युक्त आश्चर्यजनक स्थान पर लेपचा, भूटिया और नेपाली तीन मुख्य समुदाय रहते हैं। यद्यपि प्रत्येक समुदाय की अपनी विशिष्ट शारीरिक बनावट, वेशभूषा एवं आभूषण, भाषा तथा साहित्य, रीति-रिवाज तथा परम्पराएं और अपनी ही जीवन-शैली हैं फिर भी सभी सम्पूर्ण शांति तथा सौहार्द के साथ रहते हैं। कंचनजंगा पर्वत इनका रक्षक इष्ट देव है तथा लोगों का यह विश्वास है कि उनकी भूमि गुरु पद्मसंभव के आशीर्वाद से सुरक्षित है।

झांकी के अग्र भाग में गुरु पद्मसंभव की प्रतिमा दिखाई गई है तथा प्रथम और द्वितीय पश्य भाग में क्रमशः सिक्किम की मार्शल आर्ट तथा विस्मयाभिभूत करने वाला कंचनजंगा पर्वत यह संदेश देते हुए प्रतीत होता है कि मानव और प्रकृति एक हैं तथा देश के इस सुंदर भूभाग में वे एक ही बने रहेंगे।

Land of Peace & Harmony - Obeisance to the Mountain God

Sikkim, a tiny State nesting in the Himalayas, offers a magical feeling of a fairytale land. An amazing place of hidden valleys, mystical monasteries, snow-fed lakes, and mountains covered with flowers and forests is the abode of the three main ethnic communities viz. Lepchas, Bhutias and Nepalis. Though each community has its own distinctive physical features, costumes and jewellery, language and literature, customs and traditions and its own way of life, all the three live in perfect peace and harmony. Mount Kanchenjunga is the guardian deity and the people are secure in their faith that the land has been protected by the blessings of Guru Padmasambhava.

The tableau showcases a statue of Guru Padmasambhava on the tractor followed by the martial art of Sikkim and the awe inspiring Mt. Kanchenjunga on the first and second trailer respectively, conveying the message that man and nature are one, and they will remain one in this beautiful part of the country.

सिक्किम

Sikkim



खिलौने

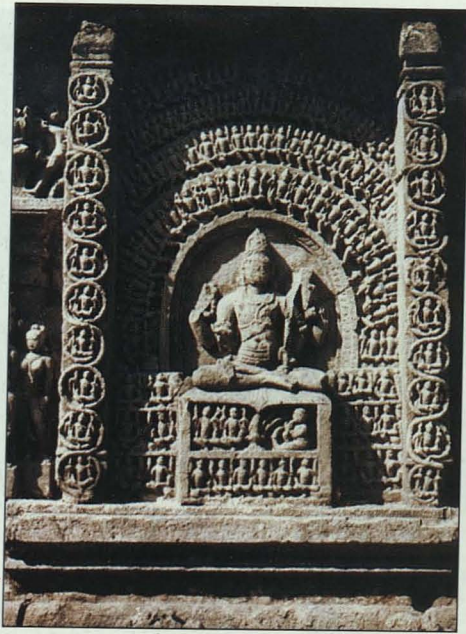
खिलौनों का बच्चों के शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास में सदैव महत्वपूर्ण योगदान रहा है। रंगारंग खिलौने न केवल बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं बल्कि उनको प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के बेहतर स्रोत भी होते हैं। खिलौने न केवल खेलने की वस्तुएं हैं बल्कि वे तत्कालीन समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का चित्रण भी करते हैं। समग्र भारत में विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाए जाते हैं परंतु उत्तर प्रदेश में बने खिलौने विविधता तथा कारीगरी के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वाराणसी, मुरादाबाद, फिरोज़ाबाद, मिर्जापुर, लखनऊ, गोरखपुर, आगरा तथा उत्तर प्रदेश के अन्य शहर विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। उत्तर प्रदेश की झांकी में वाराणसी के खिलौनों के अद्भुत संसार का चित्रण करने का प्रयास किया गया है।

Toys

Toys have always been significantly contributing to the physical, mental and social development of children. The colourful toys not only help in all-round development of children, but are also a good source of imparting primary education to them. Toys are not only play-things, but also depict the socio-cultural milieu of the contemporary society. Toys of various types are made all over India but the toys made in Uttar Pradesh occupy a place of their own because of their diversity and artistry. Varanasi, Moradabad, Ferozabad, Mirzapur, Lucknow, Gorakhpur, Agra and other cities in Uttar Pradesh are well known for crafting various types of toys. The toy industry of Varanasi is famous for handicrafts and toys with miniature wood carving. The tableau of Uttar Pradesh attempts to depict the wonderful world of toys of Varanasi.

उत्तर प्रदेश

Uttar Pradesh



चम्पानेर

किसी राष्ट्र की प्रतिभा तथा विशेषता की पहचान उसकी वास्तुशिल्प से होती है। चम्पानेर-पावागढ़ – जिसको वर्ष 2004 में युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर में शामिल किया गया है, इस वास्तुशिल्पीय धरोहर को गुजरात की झांकी में दर्शाया गया है। गुजरात के मध्यकालीन इतिहास में चम्पानेर, मंदिरों तथा अन्य स्मारकों की वास्तुशिल्प भव्यता से जगमगा रहा था। लकुलिश मंदिर पारंपरिक शैव वास्तुशिल्प का उत्कृष्ट नमूना है। टकसाल के पाषाण मेहराब उस समय की दक्ष इंजीनियरिंग तथा वास्तुशिल्प के प्रमाण हैं। बारहवीं सदी ई. पू. के अंत तक तथा इसके बाद में मस्जिद, मकबरा, आवासीय महल तथा बाजार जैसे कई कलात्मक स्मारक बनाए गए थे। ये स्मारक हिन्दू तथा इस्लामी वास्तुकला तथा मूर्तिकला संबंधी कला परम्परा के संगम के सुंदर द्योतक हैं। मूर्तिकला, पत्थर-नक्काशी तथा जाली से युक्त जामा-मस्जिद इस संगम का एक ललित नमूना है।

झांकी के ट्रैक्टर भाग में लकुलिश मंदिर दिखाया गया है। जामा मस्जिद तथा टकसाल के सात मेहराब पश्य भाग पर दिखाए गए हैं। झांकी के अग्रभाग में गुजरात का प्रसिद्ध 'गरबा' नृत्य किया जा रहा है।

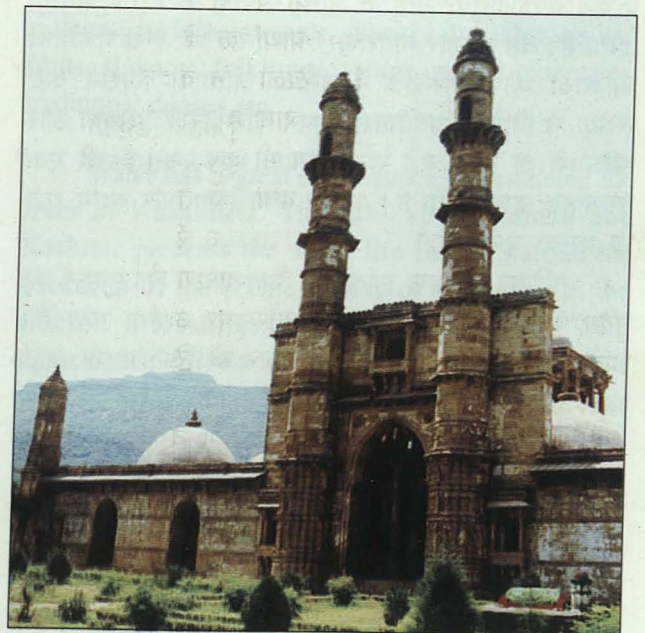
गुजरात

Champaner

The genius and character of a nation is unmistakably stamped on its architecture. The architectural heritage of Champaner – Pavagadh included as a World Heritage site by UNESCO in 2004, is depicted in the tableau of Gujarat. In the medieval history of Gujarat, Champaner was known for the architectural grandeur of its temples and other monuments. Lakulish Temple is a marvel of traditional Shaiva architecture. The stone arches of the Taksal are proof of the efficient engineering and architecture prevailing at that time. By the end of the twelfth century A.D. and thereafter, many artistic monuments like mosques, makbaras, residential palaces and bazaars were erected. These monuments symbolise the beautiful integration of Hindu and Islamic architectural and sculptural art traditions. The Jama Masjid, with its sculptures, stone carving and grills, is a fine specimen of this integration.

The tractor portion of the tableau shows the famous Lakulish temple. The Jama Masjid and the seven arches of the Taksal are displayed on the trailer. In front of the tableau, the famous 'Garba' dance from Gujarat is being performed.

Gujarat





मेरा हौचोंग्बा

मेरा हौचोंग्बा, मणिपुर के पहाड़ी और मैदानी लोगों के बीच एकता का एक बड़ा त्यौहार है। इस त्यौहार को प्रत्येक वर्ष अक्टूबर माह के अंतिम सप्ताह के दौरान मनाया जाता है। यह त्यौहार महाराजा, महारानी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मनाया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में विभिन्न आदिवासी अपने पारम्परिक वेशभूषा और हथियारों के साथ बड़े उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं जो एक मनमोहक दृश्य होता है। पहाड़ी लोग नृत्य और स्वांग युद्ध भी प्रस्तुत करते हैं।

मणिपुर की इस झांकी में "उत्तरशंग" (राजमहल का मुख्य दरवाजा) के सामने उपर्युक्त नृत्य दर्शाया गया है। झांकी के अग्र भाग में मणिपुर के पारंपरिक मार्शल आर्ट कलाकार की प्रतिमा दिखाई गई है।

Mera Houchongba

Mera Houchongba, a great festival of integration between the people of the hills and plains of Manipur, is celebrated during the last week of October every year. The festival performed in front of Maharaja, Maharani and other dignitaries wherein the members of different tribes assemble with their customary dresses and weapons. The people from the hills also indulge in war dances and sham fights.

The tableau of Manipur depicts the above performance in front of "UTRASHANG" (the main gate of the palace). The tractor portion carries a statue of a traditional martial artiste.

मणिपुर

Manipur



कश्मीर में जल-जीवन

कश्मीर, जिसे पृथ्वी पर स्वर्ग कहा जाता है, अपने प्राकृतिक दृश्यों के आलौकिक सौंदर्य से भरपूर है। यहां की हरीभरी घाटी, कलकल करती धाराएं, शांत झीलें, फूल एवं फल, शिकारा, लोक संगीत, हिमाच्छादित पर्वत, परम्परागत नृत्य आदि इसकी सुंदरता पर चार चांद लगाते हैं।

पानी कश्मीरियों के रोजमर्रा के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जम्मू और कश्मीर की झांकी में कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता की पृष्ठभूमि में राज्य में जल-जीवन को दर्शाया गया है। झांकी के अग्र भाग में एक कश्मीरी महिला को कृषि उपज के साथ दिखाया गया है। प्रथम ट्रेलर में नदी के ऊपर एक लकड़ी का पुल और लोगों को पुल पार करते हुए दर्शाया गया है। दूसरे ट्रेलर में डल झील पर एक हाउस बोट दर्शाया गया है।

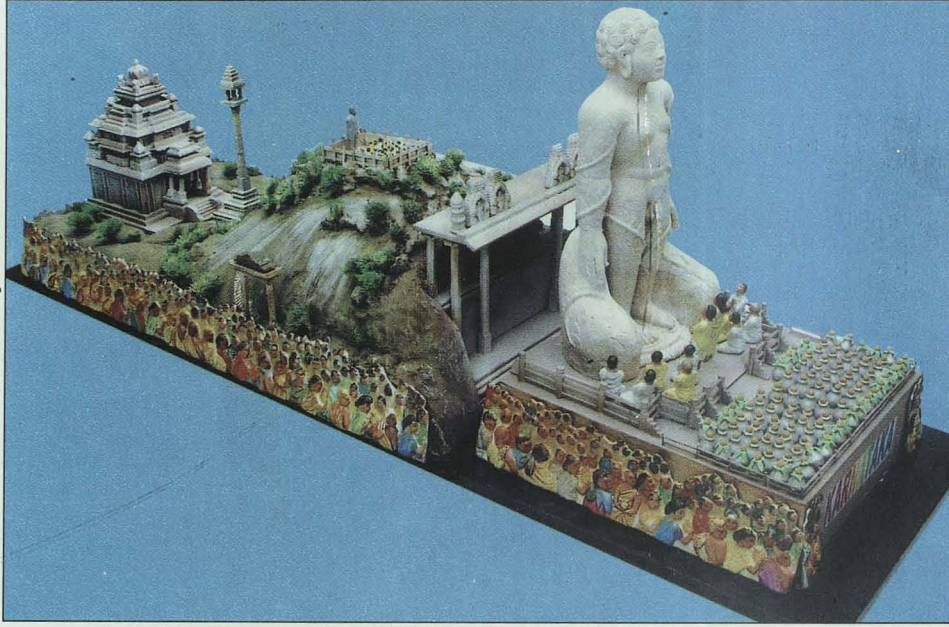
Water Life in Kashmir

Kashmir 'Paradise on Earth' is blessed with natural beauty of every kind - its landscape, lush-green valleys, sparkling streams, placid lakes, flowers and fruits, shikaras, folk music, snow-capped mountains, traditional dances etc.

Water has a great significance in sustaining the lives of Kashmiris. The tableau of Jammu and Kashmir presents the water life in the State in the backdrop of the scenic beauty of Kashmir. On the tractor, a Kashmiri woman is seen along with agricultural produce. The first trailer depicts a wooden bridge on the river and people crossing over it. A houseboat on Dal Lake is depicted in the second trailer.

जम्मू और कश्मीर

Jammu and Kashmir



महामस्तकाभिषेक

भगवान गोमटेश्वर या बाहुबली – ग्रेनाइट पहाड़ी की खड़ी शिला पर उत्कीर्ण की गई 17 मीटर ऊंची मूर्ति के महामस्तकाभिषेक या पुनीत प्रमुख अभिषेक समारोह, बड़े धार्मिक उल्लास के साथ श्रावणबेलगोला (कर्नाटक) में 12 साल में एक बार आयोजित होता है। मूर्ति के पीछे एक ढांचा तैयार करके उसके ऊपर एक मंच बनाया जाता है ताकि भक्तजनों द्वारा एक रात पहले, भगवान गोमटेश्वर के चरणों में रखे गए पवित्र जल के 1008 कलशों से अभिषेक किया जा सके। दूसरे दिन, शुभ घड़ी में वेद मंत्रों के पाठ के साथ यह पावन समारोह मनाया जाता है। भगवान गोमटेश्वर के सिर पर 1008 कलश पवित्र जल डाला जाता है। इसके बाद, मूर्ति को दूध, दही, घी, फूल, चांदी के पत्र, सिंदूर, हल्दी, केसर और चंदन लेप के साथ अनुष्ठान स्नान कराया जाता है।

कर्नाटक के इस झांकी में जैन धर्माचार्यों, 1008 कलशों आदि के साथ भगवान गोमटेश्वर की विशालकाय मूर्ति पर ध्यान केंद्रित करते हुए भव्य समारोह दर्शाया गया है। भगवान गोमटेश्वर मूर्ति की सुंदरता और बड़े आकार को देखकर ही नहीं बल्कि मानव के भौतिक इच्छाओं पर विजय प्राप्त करने और एकाग्रचित्त तपस्या के सिद्धांतों के लिए हजारों वर्ष के बाद आज भी इनकी पूजा की जाती है।

Mahamastakabhisheka

Mahamastakabhisheka, the sacred head anointing ceremony of Lord Gommateshwara or Bahubali – a 17 meter high monolith carved out of a single rock on a granite hill, is held once in twelve years at Shravanabelagola (Karnataka) with great religious fervour. A scaffolding is constructed along the back with a platform at the top to enable the devotees to perform the 'Abhisheka'. 1008 pots or 'Kalashas' containing sacred water offered by the devotees are placed at the feet of Lord Gommateshwara the night before. The next day, at an auspicious hour, the sacred ceremony is performed with the chanting of religious texts. The 1008 pots of sacred water are poured over the head of Lord Gommateshwara followed by the ritual bathing of the statue with milk, curd, ghee, flowers, silver petals, vermillion, turmeric, saffron and sandal paste.

The tableau of Karnataka showcases the spectacular ceremony by focusing on a larger than life statue of Lord Gommateshwar, Jain priests, Kalashas, etc. The statue of Gommateshwar is worshipped even today, after more than a thousand years, not only for its beauty and large size but also for the principles it upholds – the triumph of man over physical desires and single minded penance.

कर्नाटक

Karnataka



नंदा देवी – राज जात यात्रा

उत्तरांचल में राज जात (मूलतः राज यात्रा या शाही यात्रा) का आयोजन प्रत्येक 12 वर्षों में होता है। हजारों भक्तों की 280 कि.मी. लम्बी कठिन यात्रा का उद्देश्य देवी नंदा के लिए उनकी ससुराल होम कुण्ड तक मार्गरक्षण करना है। राज जात, औपचारिक रूप से पुत्री को विदा करने संबंधी विवाहोत्तर अनुष्ठान है जब बेटी अपने पति के घर के लिए रवाना होती है। अंतिम कार्यक्रम तैयार होने के बाद, समारोह के मुख्य संरक्षक 'रिंगल की छंतोली', विशेष रूप से तैयार किया गया छाता और एक चार सींगवाला मेढ़ा भेंट करते हैं। स्वर्ण से बनी नंदा देवी की मूर्ति रिंगल की छंतोली, जो देवता का आसन है, पर रखी जाती है। चार सींग वाला मेढ़ा मार्गदर्शक और देवी के निजी सामान के वाहक के रूप में कार्य करता है। आश्चर्य की बात यह है कि यह मेढ़ा इस कठिन यात्रा में जात की अगुवाई करता है और रात को विश्राम के समय वह देवी की मूर्ति के पास सोता है। यात्रा के अंतिम दिन पूजा के बाद, मेढ़ा हिमाच्छादित चोटी की तरफ अकेला चला जाता है और बीहड़ में खो जाता है।

उत्तरांचल की झांकी में दर्शाए गए चार सींगवाला बड़ा मेढ़ा नंदा देवी राज जात के शाही जुलूस के मार्गदर्शक और वाहन का प्रतीक है।

उत्तरांचल

Nanda Devi – Raj Jat Yatra

The Raj Jat (originally Raj Yatra – the Royal Journey) is taken up every 12 years in Uttarakhand. The 280 kilometer long arduous trek is undertaken by thousands of devotees to escort the Goddess Nanda to her in-laws' place at Home Kund. The Raj Jat resembles the post-nuptial rites of ceremonially seeing off the daughter as she leaves for her husband's home. After the time schedule is finalized, the chief patron of the event offers 'Ringal Ki-Chhantoli', a specially prepared umbrella and a four horned ram. Goddess Nanda's idol, which is made of gold, is placed on the 'Ringal Ki-Chhantoli', which becomes the seat of the deity. The four horned ram acts as the guide and the carrier of the personal effects of the Goddess. Surprisingly, the ram leads to the Jat on the difficult trek and when it rests during the night, it sleeps near the image of the Goddess. On the last day of the journey after the final pooja, the ram leaves alone towards the snow-clad peaks and gets lost in the wilderness.

A giant four-horned ram shown in the tableau of Uttarakhand symbolises the guide and carrier of the royal procession of the Nanda Devi Raj Jat.

Uttarakhand



असम की सुनहरी रेशम

सोम (मेशिलस बांबिसिना) तथा सोलाऊ (लिटसला पॉलियांथा) जैसे परपोषी पौधों पर निर्वाह करने वाली 'एंथेरिया असमीज' इल्ली (केटरपिलर) सुनहरी पीला मूगा रेशम बनाती है। इस प्रकार की रेशम अपनी सुंदरता तथा चमक के लिए प्रसिद्ध है। अपने टिकाऊपन तथा मजबूती के कारण बुनकरों तथा कसीदाकारों का पसंदीदा, मशहूर मूगा रेशम का इस्तेमाल असमी महिलाओं के परंपरागत वस्त्र 'मेखला चादर' बनाने के लिए किया जाता है। सभी जातियों तथा धर्मों के असमी लोग विवाह, बीहू तथा अन्य उत्सवों के दौरान मूगा रेशम के वस्त्र पहनना गर्व के साथ पसंद करते हैं।

असम की झांकी 'बीहू' उत्सवों की पृष्ठभूमि में कीटों कुकून तथा केटरपिलरों के माध्यम से 'रेशम की कहानी' कहती है।

Golden Silk of Assam

The caterpillar "Antheraea Assamese" that feeds on host plants like Som (Machilus Bombycina) and Solau (Litsala Polyantha) produces the Golden Yellow Muga silk. Silk of this kind is known for its elegance and lustre. Favourite of weavers and embroiderers because of its durability and strength, the Muga silk is used for making the traditional dress of Assamese ladies, locally known as 'Mekhla Chadar'. The Assamese people love to sport muga dresses during marriage, 'Bihu' and other festive occasions with pride and glory.

The tableau of Assam tells "the silk story" through the moths, cocoon and the caterpillar against the backdrop of 'Bihu' festivities.

असम

Assam

Minjar Fair

Chamba's 'Minjar' fair is one of the most popular celebrations of Himachal Pradesh. During the weeklong fair held on the second day of 'Shrawana' on the banks of river Ravi, the people celebrate the bounty of nature and pray for the next good harvest. 'Minjar', maize shoots or silken strands of maize along with a coconut, a few paddy shoots and a coin are offered to the Rain God in the river Ravi. The celebrations include a huge procession which terminates at the bank of the river. The royal procession is a colourful feature of this fair. In the olden days, it consisted of decorated horses, shehnai, band, banner, dancers, a palanquin of Raghubir, playing of local musical instruments, images of goddess and groups of singers. When the procession moves, special songs are sung, typical of which is the famous 'Kunjari'.

The tableau of Himachal Pradesh presents a glimpse of the weeklong celebrations of the Minjar fair.

जंगल बुक-मोगली

‘जंगल मुझसे बातें करता है क्योंकि मुझे उसे सुनना आता है’, रुडयार्ड किपलिंग की विश्व प्रसिद्ध ‘जंगल बुक’ की ये पंक्तियां मानव, जंगल तथा जीव-जंतुओं के बीच गहन तादात्म्य को प्रदर्शित करती है। इस पुस्तक के केंद्रीय पात्र अर्थात् मोगली की प्रेरणा सिओनी जिले के संतबारी गांव में भेड़ियों के बीच पले-बढ़े एक लड़के से मिली है। मोगलीलैंड का भौगोलिक क्षेत्र देश के सबसे सुंदर बाघ संरक्षण क्षेत्रों में से एक-पेंच राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत आता है।

मध्य प्रदेश की झांकी वैनगंगा (बाणगंगा) नदी के आसपास सिओनी के जंगल में भेड़ियों द्वारा पाले-पोसे गए एक शिशु की कहानी प्रभावपूर्ण तरीके से प्रदर्शित करती है। यह कहानी जंगल के परिवेश में बच्चे के बड़े होने तथा भालू ‘बालू’ तथा तेंदुआ ‘बघीरा’ का दोस्त बनने जैसी घटनाओं के ताने-बाने से रुचिकर रूप से बुनी गई है। झांकी, जंगल में मोगली को अपने साथियों के साथ घुलते-मिलते हुए भी दिखाती है।

मध्य प्रदेश

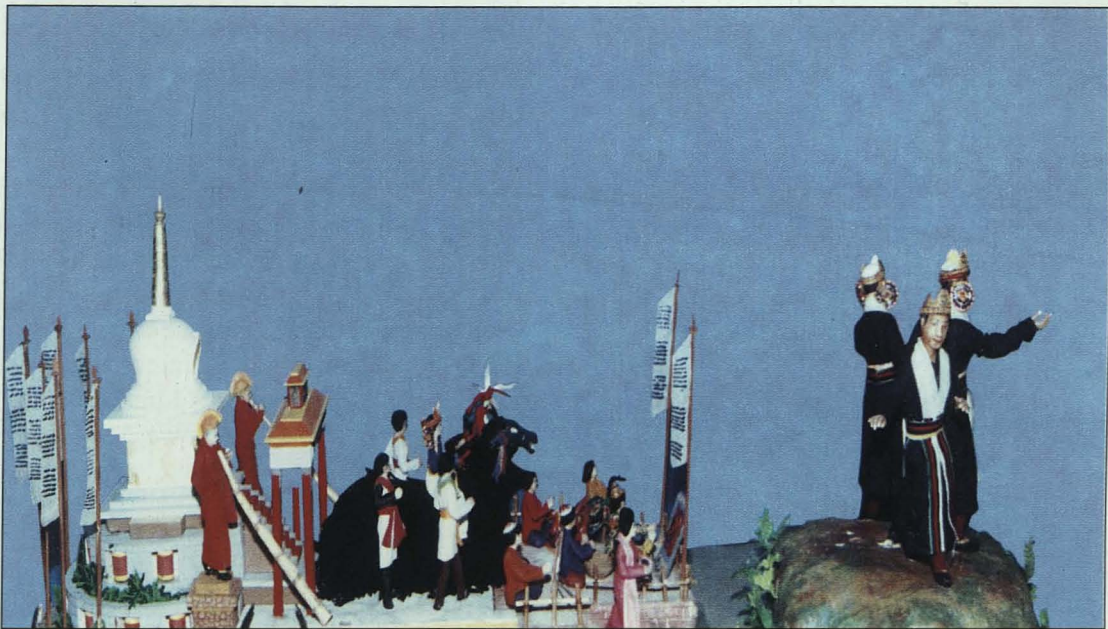
Jungle Book - Mowgli

“The jungle speaks to me because I know how to listen”, the lines from Rudyard Kipling’s world famous ‘Jungle Book’ highlight the close relationship between human beings, forests and animals. The inspiration behind the central character of the book, Mowgli, is from a boy who was brought up among the wolves in Santbari village of Seoni district. The geographical area of Mowgliland falls within one of the most beautiful Tiger reserves in the country – the Pench National Park.

The tableau of Madhya Pradesh, eloquently describes the story of an abandoned human baby, cared for and brought up by the wolves in the jungle of Seoni around the river Waingunga (Banganga). The tale interestingly weaves through the life in the jungle as the child grows and is befriended by ‘Baloo’ the bear and ‘Bagheera’ the panther. The tableau also shows Mowgli mingling with his companions in the forest.

Madhya Pradesh





मोनपाओं की परंपरागत कला तथा संस्कृति

अरुणाचल प्रदेश के तावांग जिले के बुद्ध धर्म के अनुयायी मोनपा मुख्यतः मोन क्षेत्र के निचले इलाकों में सीढ़ीदार खेतों में खेती करने वाले कृषक हैं। ये दूध, ऊन तथा परिवहन के लिए याक, पहाड़ी भेड़ों, घोड़ों तथा गायों जैसे जानवर भी पालते हैं। कलात्मक कारीगरी की समृद्ध परंपरा रखने वाले ये मोनपा अपनी ऊनी कालीनों की बुनाई तथा लकड़ी के रंगे हुए बर्तन बनाने के लिए विख्यात हैं। उत्सव मनाना मोनपाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है। ये अपने चन्द्र पंचाग के अनुसार नववर्ष उत्सव 'लोसर' मनाते हैं। तावांग आश्रम के 'तोरग्या' में दिसंबर-जनवरी माह में 3 दिन तक मठ संबंधी अनुष्ठान भी किया जाता है। मोनपाओं के अपने पारंपरिक खेल हैं—जैसे तीरंदाजी, लेगमोर, रस्सा-कसी, गोला-फेंक तथा रस्सी कूदना आदि। उत्सवों के दौरान मोनपा अपने परंपरागत नृत्य अर्थात् याक नृत्य, अजितांभो नृत्य, सिंह तथा मयूर नृत्य भी करते हैं। मुखौटा नृत्य मठ की पौराणिक कथाओं को जीवंत करता है।

अरुणाचल प्रदेश की झांकी अरुणाचल प्रदेश के मोनपाओं की परंपरागत कला तथा संस्कृति को प्रदर्शित करती है।

Traditional Art and Culture of Monpas

The Monpas of Tawang District of Arunachal Pradesh, Buddhist by religion, are largely agriculturists, practicing terrace cultivation in the low regions of the Mon area. They also rear animals like yaks, mountain sheep, horses and cows for milk, wool and transportation. Having rich traditions of artistic craftsmanship, the Monpas are known for their weaving of woollen carpets and making of painted wooden vessels. Festivals are integral to the socio-cultural life of the Monpas and they celebrate New Year's Festival "Losar" according to the lunar calendar. A monastic ritual is also celebrated in the Tawang Monastery called "Torgya" for 3 days in December-January. Monpas have their traditional games and sports like archery, legmor, tug-of-war, shot-put, skipping, etc. During the festivities, Monpas also perform traditional dances viz. Yak dance, Ajitambho dance and the Lion and Peacock dance. The Mask dances depict the mythology of the monastery.

The tableau of Arunachal Pradesh presents the traditional art and culture of the Monpas of Arunachal Pradesh.

अरुणाचल प्रदेश

Arunachal Pradesh

ताला गांव के रुद्र शिव तथा सीता बेंगरा का प्राचीन नृत्य विद्यालय

छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध कला, संस्कृति तथा शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है। झांकी में प्रदर्शित ताला गांव के रुद्र शिव की मूर्ति इतिहास तथा प्राचीन सभ्यता के साथ इस गांव के संबंधों की कहानी कहती है। ईसा पश्चात पांचवीं सदी में निर्मित रुद्र शिव की इस मूर्ति के विभिन्न हिस्सों पर विभिन्न प्रकार के जीव-जंतुओं तथा पक्षियों जैसे सांप, मगरमच्छ, मोर, कछुआ आदि के उत्कीर्णन के कारण अद्वितीय है। कलाकार की विलक्षण तथा मौलिक कल्पना भारतीय कला तथा संस्कृति के इतिहास में बेमिसाल है।

दरवाजे के कपाटों पर कामसूत्र के विभिन्न रूप दर्शाए गए हैं। कपाटों के दोनों ओर पुष्पों तथा लताओं का कलात्मक प्रदर्शन बेजोड़ है तथा ये छत्तीसगढ़ की कला तथा संस्कृति के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। झांकी के दूसरे भाग में सीता बेंगरा स्थित भारत के प्राचीन नाट्य विद्यालय का चित्रण किया गया है।

Rudra Shiva of Tala Village and Ancient Dance School of Sita Bengra

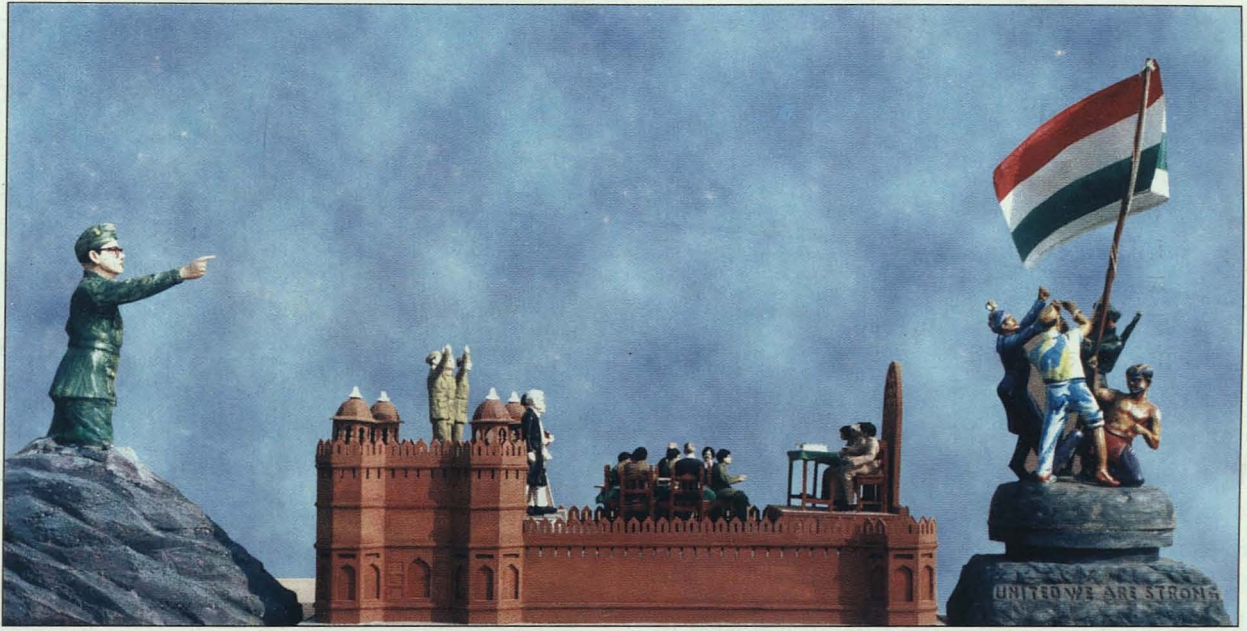
Chhattisgarh is well known for its rich art, culture and craftsmanship. The statue of Rudra Shiva of Tala village shown in the tableau narrates the story of this village's link with history and ancient civilization. The statue of Rudra Shiva, built in the fifth century A.D. is unique due to the use of various kinds of animals and birds such as snakes, crocodiles, peacocks, tortoise, etc. in engraving different physical parts of the body. The ingenious and original imagination of the artist is unparalleled in the history of Indian art and culture.

The various forms of Kamasutra are displayed at the door panels. The artistic display of flowers and creepers on both sides of the panel are unique and are fine examples of the art and culture of Chhattisgarh. In the second part of the tableau, the oldest school of drama in India, at Sita Bengra in depicted.

छत्तीसगढ़

Chhattisgarh





भारतीय राष्ट्रीय सेना (आई एन ए) के विचाराधीन अभियोग का चित्रण

न्याय विभाग की इस झांकी की विषयवस्तु भारतीय राष्ट्रीय सेना (आई एन ए) के नेताओं का विचाराधीन अभियोग है। ऐतिहासिक लाल किले में आई एन ए के तीन अधिकारियों—शाह नवाज़ खान, प्रेम कुमार सहगल तथा गुरबख्श सिंह दिल्ली पर अपनी शपथ से अभिद्रोह के लिए चलाया गया अभियोग शायद ब्रिटिश भारत के इतिहास में सबसे उल्लेखनीय अभियोग है। अभियोग का सबसे प्रसिद्ध पहलू आई एन ए के विचाराधीन अधिकारियों के बचाव वकील के रूप में पंडित जवाहर लाल नेहरू की उपस्थिति है।

झांकी में लाल किले में न्यायालय की संपूर्ण कार्यवाही का चित्रण किया गया है जिसमें वकील न्यायाधीशों के सामने अपना पक्ष रख रहे हैं। झांकी के पिछले हिस्से में आई एन ए के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आदमकद से भी बड़ी प्रतिमा दिखाई गई है।

Depiction of the INA Trial

The trial of the Indian National Army (INA) leaders is the theme of the tableau of Department of Justice. The trial of the three INA officers at the historic Red Fort – Shah Nawaz Khan, Prem Kumar Sehgal and Gurbaksh Singh Dhillon – for treason to their oath, is perhaps the most notable trial in the history of British India. The most famous aspect of the INA trial is the appearance of Pandit Jawahar Lal Nehru, as the defence counsel for the tried officers.

The tableau depicts the court in full session at the Red Fort with advocates explaining their case to a panel of judges. Another portion of the tableau depicts a larger than life statue of the founder of INA, Netaji Subhash Chandra Bose.

न्याय विभाग

Department of Justice



बाघ परियोजना

बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है। खाद्य श्रृंखला में सर्वोच्च मांसभक्षी के रूप में पारिस्थितिकी-तंत्र में संतुलन बनाए रखने में प्रकृति में इसका विशिष्ट स्थान है। लोग इसे श्रद्धा और आदर की नजर से देखते हैं, इससे भयभीत होते हैं तथा इसकी पूजा करते हैं। इस तरह बाघ अति प्राचीन काल से ही हमारी परंपरागत संस्कृति का हिस्सा रहा है। पहले बाघ समूचे भारत में काफी संख्या में पाए जाते थे, किंतु इनके प्राकृतिक आवास खत्म कर दिए जाने से इनकी संख्या घटने लगी।

1973 में भारत के जंगलों में मात्र 2000 बाघ ही बचे थे। अतः बाघों तथा इनके प्राकृतिक आवासों को और लुप्त होने से बचाने के लिए बाघ परियोजना प्रारंभ की गई थी। इसके परिणामस्वरूप बाघों की जनसंख्या बढ़ी है और इस समय बाघों की जनसंख्या 3600 से अधिक है। इस परियोजना में एक समग्र पारिस्थितिकी-तंत्र को ध्यान में रखा गया है। बाघ की रक्षा करने का अर्थ है प्रकृति तथा समूचे पारिस्थितिकी-तंत्र की रक्षा करना।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की झांकी बाघ परियोजना तथा संपूर्ण वन्य जीवन का चित्रण करती है।

Project Tiger

The Tiger is our national animal. It has a unique place in nature as a top carnivore in the food chain, in maintaining a balanced eco-system. Revered, respected, feared and worshipped, the tiger has been part of our traditional culture from time immemorial. Found throughout India in abundance in the past, the population of tigers began to decrease due to destruction of their habitat, and poaching.

In 1973, there were only 2000 tigers left in Indian forests. Hence, Project Tiger was launched in order to protect the tiger and its habitats from further extinction. As a result of this project, the population of tigers has increased, and stands at more than 3600 today. The project has a holistic eco-system approach. Protecting Tiger means protecting the nature and the whole eco-system.

Through their tableau, the Ministry of Environment and Forests carry forward the message of conservation of nature, which is of utmost importance in the present day.

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

Ministry of Environment and Forests

भूमि, आकाश तथा जल में साहसिक कार्यकलाप

विशेष रुचि वाले खेल अब काफी लोकप्रिय हैं। भारत परंपरागत तथा नवीन साहसपूर्ण खेलों जैसे स्की से बर्फ पर फिसलना, पैरा सेलिंग, हेंग ग्लाइडिंग, बैलूनिंग, पर्वतारोहण, रिवर राफ्टिंग, स्कूबा डाइविंग, सर्फिंग, व्हाइट वाटर राफ्टिंग तथा ट्रेकिंग में रुचि रखने वालों के लिए आदर्श स्थान है।

युवा कार्य और खेल मंत्रालय की झांकी भूमि, आकाश तथा जल में साहसपूर्ण कार्यकलापों के कुछ रोचक पहलुओं का चित्रण करती है। झांकी के अग्र भाग में प्रवाल क्षेत्र, रंग-बिरंगी मछलियों तथा एक स्कूबा डाइवर का चित्रण है। एक नौका तथा जल स्कीइंग भी दिखाई गई है और इसके बाद भूमि तथा आकाश के साहसपूर्ण कार्यकलापों का चित्रण है।

Adventure activities on Land, Air and Water

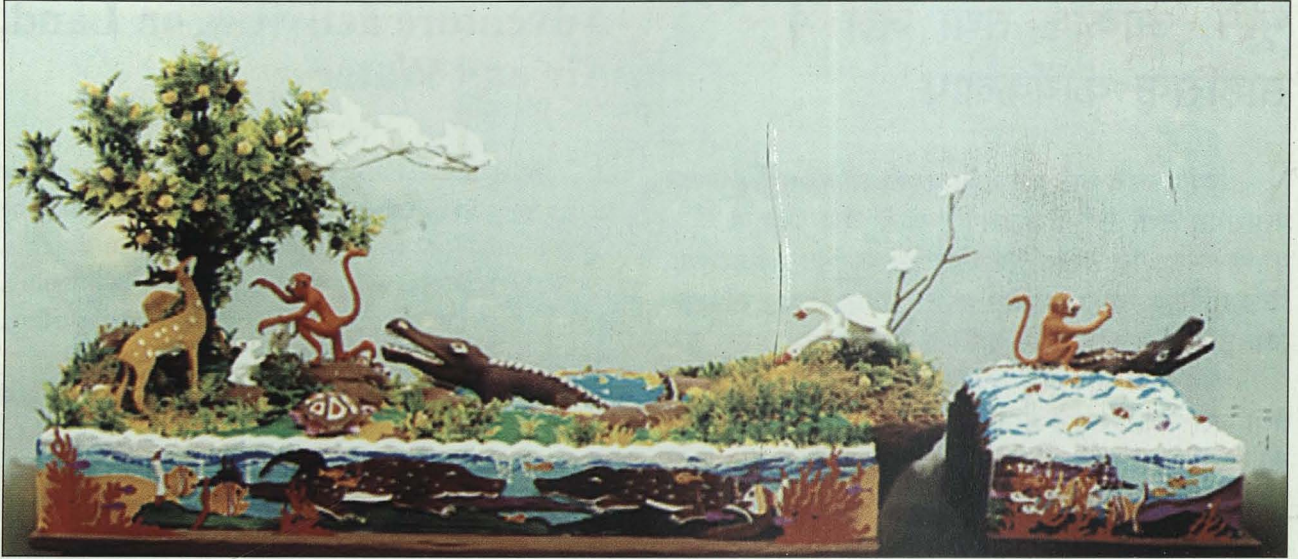
Adventure sports have now become a popular concept. India is an ideal destination for those looking for traditional as well as innovative adventure sports, be it skiing, para-sailing, hang-gliding, ballooning, mountaineering, river rafting, scuba diving, surfing, white water rafting or trekking.

The tableau of the Ministry of Youth Affairs and Sports depicts some of the interesting aspects of adventure sports activities on land, air and water. The front portion of the tableau depicts a coral area, colourful fish and a man surfing on the waves. A boat and water skiing are shown. Besides, this is followed by depiction of other adventure sports activities, such as trekking, ballooning, para sailing and hang-gliding.

युवा कार्य तथा खेल मंत्रालय

Ministry of Youth Affairs and Sports





चतुर बंदर

केन्द्रीय लोक निर्माण की फूलों से सजी झांकी पंचतंत्र की कहानियों में से एक—चतुर बंदर की कहानी प्रदर्शित करती है।

ट्रैक्टर में एक बंदर को मगरमच्छ पर सवार होकर उसके घर की ओर जाते हुए दिखाया गया है। एक जामुन का पेड़ दिखाया गया है, जहां पर इस कहानी के दो पात्रों में मित्रता हो जाती है। बंदर को मगरमच्छ की पीठ से भागते हुए पेड़ पर चढ़कर यह कहते हुए दिखाया गया है कि वह अपना कलेजा, जिसे मगरमच्छ की पत्नी खाना चाहती है, पेड़ पर ही छोड़ आया है। यह कहानी स्पष्ट संदेश देती है कि मुसीबत में किसी भी व्यक्ति को अपनी सुध-बुध नहीं खोनी चाहिए।

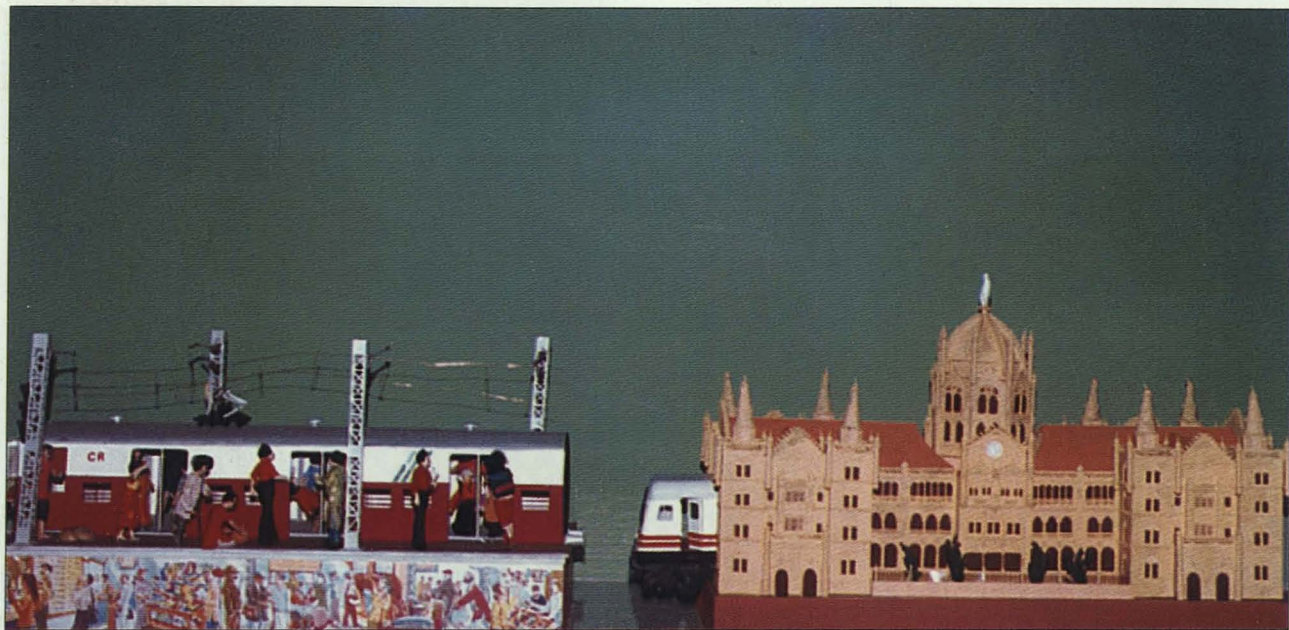
Chatur Bandar

The floral tableau of the Central Public Works Department (C.P.W.D.) presents one of the stories of the Panchtantra – “CHATUR BANDAR” (The Clever Monkey).

On the tractor, a monkey is shown riding on the back of a crocodile on the way to the latter's home. A Jamun tree is depicted, where these two characters become friends. The monkey is later shown getting off the crocodile's back and escaping to the tree on the plea that he has left his liver on the tree, something that the crocodile's wife wants to eat. The story eloquently conveys the message that one should never lose one's presence of mind when one is in trouble.

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

Central Public Works Department



द्रुत परिवहन का अग्रदूत

रेल आम आदमी और प्रमुख उद्योगों की मुख्य परिवहन प्रणाली के रूप में राष्ट्र के जीवन में विशिष्ट भूमिका अदा करता है। भारत की धरती पर वर्ष 1853 से अपनी यात्रा शुरू करती भारतीय रेल विशेष रूप से अपनी इमारतों की दृष्टि से समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों का खजाना है। मुंबई स्थित पूर्व विक्टोरिया टर्मिनल जो अब छत्रपति शिवाजी टर्मिनस के नाम से जाना जाता है, को जुलाई 2004 में यूनेस्को विश्व सांस्कृतिक धरोहर क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया है।

मुंबई की जीवन-रेखा अर्थात् मुंबई उपनगरीय रेल भारतीय रेल जितनी ही पुरानी है। भारतीय रेलवे विश्व में सबसे बड़े उपनगरीय रेल-तंत्र का संचालन करती है। इसके अंतर्गत लगभग 2200 उपनगरीय रेलगाड़ियां चलती हैं जो प्रतिदिन छह मिलियन से भी अधिक यात्रियों को लाती-ले जाती हैं।

रेल मंत्रालय की झांकी में भारतीय रेल को द्रुत परिवहन के अग्रदूत के रूप में चित्रित किया गया है। पहले ट्रेलर में छत्रपति शिवाजी टर्मिनल को प्रदर्शित किया है। दूसरे ट्रेलर में मुंबई की एक उपनगरीय रेलगाड़ी में लोगों को चढ़ते-उतरते दिखाया गया है।

रेल मंत्रालय

Torch-bearer of Rapid Transportation

As the principal mode of transport for the common man and a core industry, the Railways play a significant role in the life of the nation. Railways, which began their journey on Indian soil in 1853, are repository of a rich heritage especially in terms of their structures. The erstwhile Victoria Terminus, now Chatrapati Shivaji Terminus at Mumbai, has been declared a UNESCO World Heritage site in July 2004.

The lifeline of Mumbai i.e. Mumbai Suburban Railway, is as old as the Railways in India. Indian Railways operate the largest suburban network in the world running about 2200 suburban trains and carrying over six million passengers everyday.

The tableau of the Ministry of Railways depicts Indian Railways as the torch-bearer of rapid transportation. On the first trailer is depicted the Chatrapati Shivaji Terminus. In the second trailer, people are shown boarding and alighting from a suburban train in Mumbai.

Ministry of Railways



भारतीय डाक के 150 वर्ष

यह झांकी इस विभाग की दूर-दूर तक पहुंच तथा उसकी बहुविध गतिविधियों—प्राचीन से नवीन के परिवर्तन को दर्शाती है। इस यात्रा का नाटकीय चित्रण घूमते हुए घनाकृति पर चार डाक टिकटों को दर्शाता है जो भारतीय डाक के 150 वर्ष पूरे होने पर जारी किए गए थे।

यह झांकी हमें उस जमाने की परंपरागत लाल वर्दी से सुसज्जित डाकिया की याद दिलाती है जो चिट्ठियों का थैला लटकाए घूमता था। पेड़ पर बैठा हुआ कबूतर तथा लटकती हुई डाक पेटी संचार के परंपरागत रूप का प्रतीक है। कलकत्ता सामान्य डाकघर की शान एक सुप्रतिष्ठित डाक सेवा स्थापित करने के शुरुआती प्रयासों का प्रतिनिधित्व करती है। हमारा ध्यान नवीनतम कंप्यूटरों से सुसज्जित डाक काउंटरों की ओर आकृष्ट होता है जहां से विभिन्न उपभोक्ताओं को अनेक प्रकार की सेवाएं प्रदान की जाती हैं। डाक के बारकोड को पढ़ने के लिए स्कैनर के इस्तेमाल को भी विशेष रूप से दिखाया गया है। झांकी के साथ-साथ डाक वाहक तथा वितरक चल रहे हैं जिनमें पुराने समय के हरकारे से लेकर नवीनतम वर्दी में आज का डाकिया शामिल हैं।

150 Years of India Post

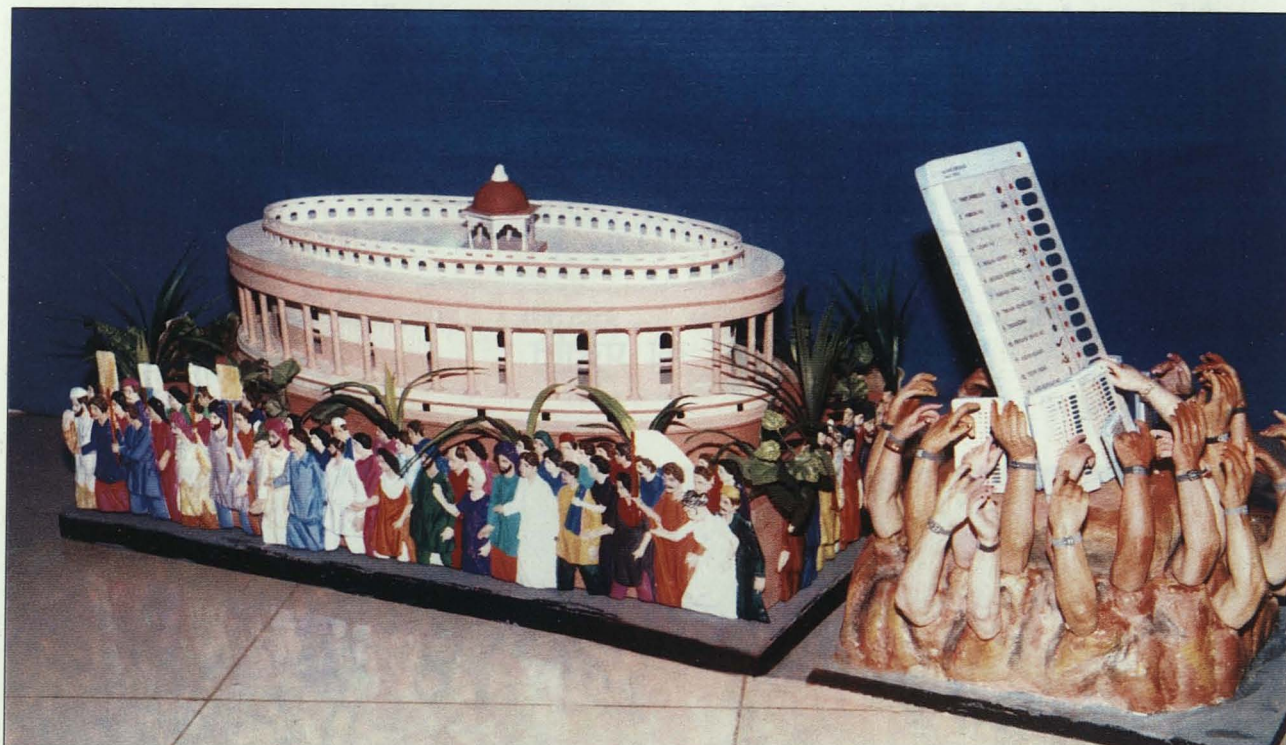
The tableau depicts the vast outreach and the multifarious activities and transition from antiquity to modernity of the postal service. The dramatic depiction of this journey through time is shown by a rotating cuboid carrying the set of 4 stamps released to commemorate 150 years of India Post.

The tableau reminds us of the traditional red costume of the then postman, holding a bunch of letters and a bag. A pigeon sitting on the tree and a hanging letter box is symbolic of traditional forms of communication. The grandeur of the Calcutta General Post Office (GPO) represents the pioneering efforts to establish a well recognized postal service.

The focus shifts to counters equipped with modern computers providing multiple services to a variety of customers. The scanning of the mail barcode has also been highlighted. Walking alongside the tableau are carriers and deliverers of mail through the ages from the mail runner (harkara) to the postman in his latest uniform.

डाक विभाग

Department of Posts



संसदीय प्रजातंत्र

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। आजादी के पश्चात् हमारे देश की प्रमुखतम उपलब्धि एक गतिशील, जीवंत तथा धर्मनिरपेक्ष प्रजातंत्र की स्थापना करना था, जो संविधान में प्रतिष्ठापित हमारे लोगों की आशाओं और अभिलाषाओं के एकीकरण का प्रतीक है।

ट्रैक्टर वाले हिस्से में वृहद आकार की एक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन, लोगों के असंख्य हाथ तथा झांकी के ट्रैलर में संसद भवन की प्रतिकृति भारतीय संसदीय लोकतंत्र की शक्ति के प्रतीक हैं। संसदीय कार्य मंत्रालय की झांकी स्पष्ट रूप से यह संदेश देती है कि लोकतांत्रिक परंपराओं की जड़ें भारतीय जनमानस में गहराई तक पहुंची हुई हैं।

संसदीय कार्य मंत्रालय

Parliamentary Democracy

India is the largest democracy in the world. The most important achievement of our nation since Independence has been the establishment of a dynamic, vibrant and secular democracy which also symbolises the unification of the hopes and aspirations of our people as enshrined in the Constitution.

A big sized Electronic Voting Machine (E.V.M.) and innumerable hands of people on the tractor portion and replica of the Parliament House on the trailer of the tableau symbolises the strength of the Indian parliamentary democracy. The tableau of the Ministry of Parliamentary Affairs eloquently conveys the message that the democratic traditions are deep rooted in the Indian psyche.

Ministry of Parliamentary Affairs

31

बच्चों की प्रस्तुति



CHILDREN'S PAGEANT

वीरता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता-2004

Winners of National Award for Bravery – 2004

नाम	राज्य	Name	State
कुमारी बोया गीतांजलि**	आंध्र प्रदेश	Km. Boya Geethanjali**	Andhra Pradesh
मास्टर हैरी चौधरी***	नई दिल्ली	Master Harry Chaudhry***	New Delhi
मास्टर एन कांधा कुमार**** (मरणोपरांत)	तमिलनाडु	Master N. Kandha Kumar****(Posthumous)	Tamil Nadu
मास्टर ललथनजावना*****	मिज़ोरम	Master Lalthanzawna*****	Mizoram
कुमारी मजदा उर्फ बबली*****	उत्तरांचल	Km. Majda alias Babli*****	Uttaranchal
मास्टर होतीलाल	उत्तर प्रदेश	Master Hotilal	Uttar Pradesh
मास्टर रमणदीप सिंह	पंजाब	Master Ramandeep Singh	Punjab
मास्टर पवन कुमार	पंजाब	Master Pawan Kumar	Punjab
मास्टर आर.के. राहुल सिंह	मणिपुर	Master R.K. Rahul Singh	Manipur
कुमारी शायनी टी.ए.	केरल	Km. Shiney T.A.	Kerala
मास्टर जोंसी सैमुअल	केरल	Master Johncy Samuel	Kerala
मास्टर खियंगडिंगलिआना	मिज़ोरम	Master Khiangdingliana	Mizoram
कुमारी प्रियंका	हरियाणा	Km. Priyanka	Haryana
मास्टर साजन एंटोनी	केरल	Master Sajan Antony	Kerala
मास्टर गोपाल सिंह सोंदिया	मध्यप्रदेश	Master Gopal Singh Sondia	Madhya Pradesh
मास्टर बी.साई कुशल	आंध्रप्रदेश	Master B. Sai Kushal	Andhra Pradesh
मास्टर टी.पी.कृष्ण प्रसाद	केरल	Master T.P. Krishna Prasad	Kerala
कुमारी महिमा तिवारी	उत्तर प्रदेश	Km. Mahima Tiwari	Uttar Pradesh
मास्टर विनोद आर. जैन	कर्नाटक	Master Vinod R. Jain	Karnataka

* भारत पुरस्कार

** गीता चोपड़ा पुरस्कार

*** संजय चोपड़ा पुरस्कार

**** बापू गयाधानी पुरस्कार

* Bharat Award

** Geeta Chopra Award

*** Sanjay Chopra Award

**** Bapu Gayadhani Award

स्कूली बालक और बालिकाओं का बैंड

स्कूली बच्चों की यह सांस्कृतिक प्रस्तुति, 'एक तारा तुन सितान' धुन बजाते हुए बालक और बालिकाओं के बैंड के नेतृत्व में आगे बढ़ रही है। इसमें श्री गुरु तेग बहादुर खालसा गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, शीशगंज, चांदनी चौक; गुरु नानक गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, घंटाघर; दशमेश पब्लिक स्कूल, विवेक विहार; गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल, हेमकुंट कालोनी; कमल मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मोहन गार्डन; एस एम जैन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कमला नगर; जैन समनोपासक स्कूल, सदर बाजार; महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, अशोक विहार और विवेकानन्द स्कूल, डी ब्लॉक, आनन्द विहार के बच्चे भाग ले रहे हैं।

ध्वज वाहक-बालक और बालिकाएं

बालक और बालिकाओं के मार्च पास्ट में भाग ले रहे ये बच्चे गवर्नमेंट सर्वोदय कन्या विद्यालय, रिठाला; सेंट जोन्स को-एजुकेशन सेकेंडरी स्कूल, खेड़ा खुर्द; माउंट आबू पब्लिक स्कूल, सेक्टर-5, रोहिणी; मदर डिवाइन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर-3, रोहिणी; राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सेक्टर-10, द्वारका; सलवान बॉयज सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजेन्द्र नगर; कमर्शियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दरियागंज; हैपी होम पब्लिक स्कूल, सेक्टर-II, रोहिणी और कमल इंटरनेशनल स्कूल नांगली सकरवति, नांगलोई के हैं।

Band by School Boys and Girls

The cultural pageant of school children is headed by a band contingent of girls and boys playing the tune "EK TARA TUN SITAN". The participating schools are Shri Guru Teg Bahadur Khalsa Girls' Senior Secondary School, Sis Ganj, Chandni Chowk; Guru Nanak Girls' Senior Secondary School, Ghanta Ghar; Dashmesh Public School, Vivek Vihar; Guru Harkishan Public School, Hemkunt Colony; Kamal Model Senior Secondary School, Mohan Garden; S. M. Jain Senior Secondary School, Kamala Nagar; Jain Samanopasak School, Sadar Bazar; Maharaja Agrasen Public School, Ashok Vihar and Vivekanand School, D-Block, Anand Vihar.

Flag Bearers – Boys and Girls

Children participating in the march past of girls and boys are drawn from Government Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Rithala; St. John's Co-Education Secondary School, Khera Khurd; Mount Abu Public School, Sector-5, Rohini; Mother Divine Senior Secondary School, Sector-3, Rohini; Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya, Sector-10, Dwarka; Salwan Boys' Senior Secondary School, Rajendra Nagar; Commercial Senior Secondary School, Darya Ganj; Happy Home Public School, Sector-11, Rohini and Kamal International School, Nangli Sakarwati, Nangloi.

उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य

सर्वोदय कन्या विद्यालय, एस.पी.रोड, नांगलोई, दिल्ली की छात्राएं उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य प्रस्तुत करती हैं जिसमें नवविवाहिता मेला देखने जाने के लिए अपने रसिया (पति) से घाघरा, चोली और चुन्नी की मांग करती हुई कहती है :-

“आगरे ते घाघरा मंगइ दे रसिया, मैं तो मेला देखन जाऊंगी”

और गीत का शीर्षक है “ताज की तस्वीर और जमुना जी का नीर”।

देवरत्तम

देवरत्तम, तमिलनाडु के अल्प प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक है। यह ‘काम्बला नाइकर’ समुदाय का एक धार्मिक तथा सामाजिक नृत्य है जो आंध्रप्रदेश से आकर यहां बसे थे। नाइकरों का यह दृढ़ विश्वास है कि वे “देवों” के वंशज हैं तथा ‘देवरत्तम’ एक देव-नृत्य है जो उन्हें सौंपा गया है। यह नृत्य चिथिरई (चैत्र) के माह अर्थात् अप्रैल-मई के दौरान और विवाहों तथा अन्य लोक कार्यक्रमों में किया जाता है। ‘दवे थुन्थुबी’ कंधे पर ढोल के आकार जैसा एक वाद्ययंत्र लटकाया जाता है और दोनों हाथों में लकड़ी के स्टिक लेकर बजाते हैं और नृत्य करते हैं। त्यौहार के संदर्भ में देवरत्तम को सामाजिक सभाओं में किए जाने वाले नृत्य से काफी अलग देखा जाता है। इसमें गांव के मुखिया की अनिवार्य उपस्थिति जैसी कड़ी आचार-संहिता लागू होती है। इसमें परिधान के रूप में धोती और रंग-बिरंगी पगड़ी पहनी जाती है। इस लोक नृत्य को दक्षिणी जोन सांस्कृतिक केंद्र, तंजावूर के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

34

Folk Dance of Uttar Pradesh

The students of Sarvodaya Kanya Vidyalaya, S.P. Road, Nangloi, Delhi present the folk dance of Uttar Pradesh, in which a newly married lady demands Ghagra, Choli and Chunri from her Rasia (Husband) to go to see the fair and says:-

“AGRE TE GAGHRA MANGAI DE RASIA, MAI TO MELA DEKHAN JAUNGI”

And the title of the song is “TAJ KI TASVIR AUR JAMUNA JI KA NEER”

Devarattam

Devarattam is one of the lesser known forms of folk dances of Tamil Nadu. It is a ritualistic and social dance of the ‘Kambala Naikar’ community who migrated from Andhra Pradesh. The Naickars strongly believe that they are the descendants of “Devas”; and the dance of God ‘Devarattam’ has been handed over to them. The dance is performed during the month of Chithirai (Chaitra) i.e. April – May during marriages and other public functions. During the dance, ‘Deva Thunthubi’, a whirring percussion instrument shaped like a drum, is worn across the shoulder and beaten with sticks. Certain strict codes of conduct persist, like the mandatory presence of the village head. The costume worn during the dance is dhoti and a colourful turban. The Children of South Zone Cultural Centre, Thanjavur are presenting this dance.

विरासत

राजस्थान अपने वीर योद्धाओं की वीरता और शौर्य के लिए प्रसिद्ध है। इस राज्य में मीणा, भील, गुज्जर और भोपा-भोपी जैसी विभिन्न जन-जातियाँ भी रहती हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी समृद्ध परम्परागत लोक साहित्य को संजोए हुए हैं।

सचदेव पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली के छात्र, भोपा-भोपी द्वारा गाया जाने वाला राजस्थानी लोक गीत तथा नृत्य प्रस्तुत करते हैं।

Virasat

Rajasthan – is known for the heroism and chivalry of its warriors. The state is also inhabited by various tribes like the Meenas, Bhils, Gujjars and Bhopa-Bhopis, who for generations have followed and preserved their rich traditional folk-lore.

The students of Sachdeva Public School, Rohini, Delhi present a folk song and dance practiced by the Bhopa-Bhopis of Rajasthan.

डोला

“गैली ओ गैली हम हवा के साथ-साथ
उड़ रहे हैं और गाते जा रहे हैं,
हम लड़ी में पिरोए मोती की तरह उन्हें
अपने साथ लिए जा रहे हैं”

—सरोजनी नायडू

असम की पहाड़ियाँ कहारों के हर्षोल्लास से गुंजायमान हो उठती हैं। ज्यों-ज्यों वे अपने कांतिमय खजाने के साथ आगे बढ़ते हैं, एक शर्मीली नई दुल्हन अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचने के लिए उनकी देख-रेख में आश्वस्त है।

आज भी ये कहार नवविवाहिता दुल्हनों को उनकी आशाओं, इच्छाओं, अभिलाषाओं और सपनों के घर ले जा रहे हैं। डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, युसुफ सराय, दिल्ली के बच्चों की यह प्रस्तुति एक नवविवाहिता दुल्हन के एहसासों और आकांक्षाओं और अपने कर्तव्यों का पालन करने में कहारों के उत्साह को वयक्त करने का प्रयास है।

Dola

“ Gaily O Gaily we glide and we sing,
We bear her along like a pearl on a string”

— Sarojini Naidu

The hills of Assam reverberate with joy and excitement of palanquin bearers, as they march forward with their radiant treasure — a shy young bride entrusted to their care, to take her safely to her destination.

Even today, these palanquin bearers are carrying newly wedded brides to their new homes full of hopes, desires, aspirations and dreams. The presentation by the children of D.A.V. Model School, Yusuf Sarai, Delhi attempts to express the feelings and aspirations of a newly married bride, and the zeal of palanquin bearers in performing their duty.

छत्तीसगढ़ी कर्मा

दक्षिण मध्य जोन सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर के कलाकार, 'छत्तीसगढ़ी कर्मा' नृत्य प्रस्तुत करते हैं। वे सितंबर माह (भाद्रपद एकादशी) में व्रत रखते हैं। कई काटी गई फसल का उपयोग करने से पहले आदिवासी लोग दूसरे दिन अपने आंगन में कर्मा वृक्ष की एक शाखा लगाते हैं और देवता को भोग लगाते हैं। इस अवसर पर, सभी लोग कर्मा गीतों की धुन पर नृत्य करते हैं। शरीर की भंगिमा ही इस नृत्य का बुनियादी पहलू है।

नर्तक रंग-बिरंगी पोशाकें पहनते हैं। कर्मा नृत्य के दौरान सरबन्धों को सीपियों और मोर-पंखों से सजाया जाता है तथा नगाड़ा, ढोलक और मण्डल मुख्य वाद्ययंत्रों के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

Chhattisgari Karma

The artists of South Central Zone Cultural Centre, Nagpur present 'Chhattisgarhi Karma' dance. They observe a fast in the month of September (Bhadrapada Ekadashi). Before using the newly harvested crop, the tribal people plant a branch of the Karma Tree in their courtyard. On the second day they offer food to God. All of them dance to the tunes of 'Karma' songs. Body movement is the basic aspect of this dance.

The dancers wear colourful dresses. The head gear is decorated with shells and peacock feathers. Nagara, dholak and mandal are the main musical instruments used during this Dance.

बरसाने की होली

पौराणिक मूल वाले रंगों का त्यौहार 'होली' मार्च माह में बसंत के आगमन के साथ एक या अनेक रूप में सम्पूर्ण भारत में मनाई जाती है। यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। पश्चिमी उत्तरप्रदेश विशेषकर मथुरा जिले के बरसाना गांव में मनाई जाने वाली होली विश्व प्रसिद्ध है।

उत्तरी मध्य जोन सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद के बच्चे भारतीय समाज की बहुरंगी संस्कृति का प्रतीक बनाते हुए उनकी आयु, जाति, पंथ तथा धर्म का ध्यान न रखते हुए एक-दूसरे पर रंग डालकर प्रसिद्ध 'बरसाने की होली' प्रस्तुत कर रहे हैं। होली के रंग, प्रेम, भाईचारे और एकता का संदेश देते हैं।

Barsane Ki Holi

'Holi', the festival of colours having a mythological origin, is celebrated all over India in one form or the other in the month of March coinciding with the arrival of spring. The festival symbolises the victory of good over evil. Holi being celebrated in the Western Uttar Pradesh, especially in Barsana village in Mathura district, is well known the world over.

The children of North Central Zone Cultural Centre, Allahabad, are presenting the famous 'Barsane Ki Holi' by splashing colours on each other, irrespective of their age, cast, creed, gender and religion, symbolising the kaleidoscopic culture of Indian society. The colours of Holi give the message of love, brotherhood and unity.

तलवार नृत्य

इस नृत्य की विषय-वस्तु भगवान को धन्यवाद देने की अभिव्यक्ति है। इस नृत्य में, नर्तक एक तलवार और सिम्फिया लेता है। इसमें आगे और पीछे पग रखना, अपना सिर झुकाना और अपनी तलवार तथा सिम्फिया गिरा देना और पीछे हट जाना शामिल है। यह प्रक्रिया कई बार दोहराई जाती है। नर्तक आगे और पीछे होकर एक-दूसरे का सामना करते हैं। पुरुष नर्तक के परिधान में सबसे महत्वपूर्ण है तलवार, रजत तरकश और तीर। इससे उनके पूर्वजों का स्मरण होता है जिन्होंने नारी जाती के सम्मान, शुचिता और सतीत्व की रक्षा और सुरक्षा करने में अपने प्राण न्यौछावर किए थे। खासी जनजाति में नारी जाति का स्थान काफी ऊंचा है। वे शत्रुओं से अपनी भूमि की रक्षा भी करते हैं। फसल बोने के बाद कुछ अन्य गांवों में भी यह नृत्य किया जाता है। नृत्य करने का यह अवसर जब आता है तो लोगों के दिल हर्षोल्लास से भर जाते हैं और माता-पिता अपने बेटे-बेटियों को साल में एक बार नृत्य-स्थान पर देखकर गर्व करते हैं। यह तलवार नृत्य पूर्वोत्तर जोन सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

साम्मी लोक नृत्य

महिलाओं द्वारा किए जाने वाले पंजाब के लोकप्रिय लोकनृत्य 'साम्मी' का नामकरण एक युवती के नाम पर किया गया है जो अपने प्रेमी से अत्यधिक प्यार करती थी और उसी के लिए नाचती गाती थी। यह आसान-सा नृत्य है। अधिकतर भंगिमाएं हाथों की मुद्राओं, पैरों की तालों, तथा तालियों तक सीमित हैं। नर्तक गोला बनाकर खड़े होते हैं तथा बगल से अपने हाथों को घुमाते हुए ठीक सामने छाती तक लाकर ताली बजाते हैं। वे लय तथा ताल के साथ हाथों को नीचे लाते हैं तथा पुनः ताली बजाते हैं। इसी मुद्रा को दोहराते हुए वे आगे की ओर झुकते हुए पुनः ताली बजाते हैं तथा गोलाई में घूमते हैं तथा यह लय पैरों की ताल के साथ मिलाई जाती है। पैरों की गति तथा तालियों की ताल में एकलयता बनाए रखी जाती है।

The Sword Dance

The theme of this dance is the manifestation of thanksgiving to God. In this dance, a dancer holds a sword and symphiah (turf). The dance consists of stepping backward and forward, bowing heads and dropping down swords and symphiah and then recede. This process is repeated several times. The dancers face each other charging forward and receding.

In the costume wore by the male, the most important is the sword, the silver quiver and arrows. This brings the memories of their forefathers who laid down their lives to guard and protect the honour, purity and chastity of their womenfolk whose status is considered very high in the Khasi tribe, and also to protect their land from enemies. This dance is also held in some other villages after the sowing season. When this occasion comes once in a year, the hearts of the people are filled with joy and happiness and the parents are proud to see their sons and daughters in the dancing arena. The sword dance is being presented by the children of the North East Zone Cultural Centre, Dimapur.

Sammi Dance

'Sammi', a popular folk dance form of Punjab performed by women is named after a young heroine, who was deeply in love and used to sing and dance for the sake of her lover. This is a very simple dance. Most of the gestures are confined to the movements of the arms, clicking and clapping. The dancers stand in a ring and swing their hands bringing them up from the sides, right in front, up to the chest and clap. They take the hands down in accordance with rhythm and clap again. Repeating this gesture, they bend forward and clap again and go round in a circle, as the rhythm of beating of feet and clapping is maintained.

The children of North Zone Cultural Centre, Patiala, are presenting a glimpse of this popular folk dance.